

मुख्य परीक्षा

माओवादी युग के बाद के भारत में शासन का भविष्य

संदर्भ

वामपंथी उग्रवाद (LWE) पर हालिया आकलन इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि हालांकि सुरक्षा अभियानों ने माओवादी हिंसा को कमज़ोर कर दिया है, लेकिन शासन की विफलताएं - विशेष रूप से पांचवीं अनुसूची वाले क्षेत्रों में - अभी भी अपर्याप्त रूप से संबोधित की गई हैं।

पांचवीं अनुसूची के क्षेत्र क्या हैं?

- **उद्देश्य:** पर्याप्त जनजातीय आबादी वाले क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों (ST) के लिए विशेष शासन और संरक्षण सुनिश्चित करना।
- **भौगोलिक क्षेत्र:** यह आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश सहित 10 राज्यों के जनजातीय बहुल क्षेत्रों पर लागू होती है।

पांचवीं अनुसूची के क्षेत्रों में शासन की विफलताएं -

- संवैधानिक सुरक्षा उपायों का कमज़ोर प्रवर्तन: राज्यपाल की विवेकाधीन शक्तियों का शायद ही कभी प्रयोग किया जाता है।
- अप्रभावी जनजातीय सलाहकार परिषदें (TACs): ये मुख्य रूप से केवल परामर्शदात्री निकाय बनकर रह गई हैं, जिनका नीतिगत निर्णयों पर बहुत कम वास्तविक प्रभाव पड़ता है।
- पेसा (PESA), 1996 का खराब कार्यान्वयन: भूमि अधिग्रहण और खनन के मामलों में अक्सर ग्राम सभा की सहमति की अनदेखी की जाती है।
- बन अधिकार अधिनियम (FRA), 2006 का कमज़ोर पड़ना: व्यक्तिगत और सामुदायिक बन अधिकारों की मान्यता में अत्यधिक देरी।
- भूमि का हस्तांतरण और विस्थापन: खनन, बांध और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के कारण बड़े पैमाने पर बेदखली।
- प्रशासनिक अलगाव: नौकरशाही, पुलिस और राजस्व अधिकारी ज्यादातर गैर-स्थानीय होते हैं, जिससे विश्वास की कमी (ट्रस्ट डेफिसिट) पैदा होती है।
- औपनिवेशिक शासन संरचनाएं: एकसमान प्रशासनिक और कानूनी प्रणालियाँ जनजातीय सामाजिक वास्तविकताओं के अनुकूल नहीं हैं।
- कमज़ोर सेवा वितरण: न्याय, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पुलिसिंग और कल्याणकारी योजनाओं तक अपर्याप्त पहुंच।
- सीमित राजनीतिक सशक्तिकरण: स्थानीय स्वशासन निकाय मौजूद तो हैं, लेकिन उनमें वास्तविक स्वायत्ता और वित का अभाव है।
- खराब जवाबदेही: कमज़ोर शिकायत निवारण तंत्र और राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) तथा मंत्रालयों द्वारा सीमित निगरानी।

आगे की राह -

- संवैधानिक शासन को सुदृढ़ करना: राज्यपाल की विशेष शक्तियों को सक्रिय करना और जनजातीय हितों की रक्षा में जनजातीय सलाहकार परिषदें (TACs) को प्रभावी बनाना।
- वास्तविक स्वशासन सुनिश्चित करना: भूमि अधिग्रहण, खनन और विकास परियोजनाओं में ग्राम सभा की अनिवार्य सहमति को लागू करके पेसा (PESA) का कड़ाई से कार्यान्वयन सुनिश्चित करना।
- भूमि और बन अधिकारों को सुरक्षित करना: जनजातीय समुदायों के विस्थापन और आजीविका के नुकसान को रोकने के लिए बन अधिकार अधिनियम (FRA) को पूर्णतः क्रियान्वित करना।

- **स्थानीय प्रतिनिधित्व में सुधार:** अलगाव को कम करने के लिए प्रशासन, पुलिस और सेवा वितरण संस्थानों में आदिवासियों की भर्ती में वृद्धि करना।
- **जन-केंद्रित विकास को अपनाना:** निष्कर्षण (extractive) आधारित मॉडलों से हटकर आजीविका-केंद्रित, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील विकास की ओर बढ़ना, जिसमें मजबूत जवाबदेही तंत्र हो।

स्रोत: [द हिंदू](#)



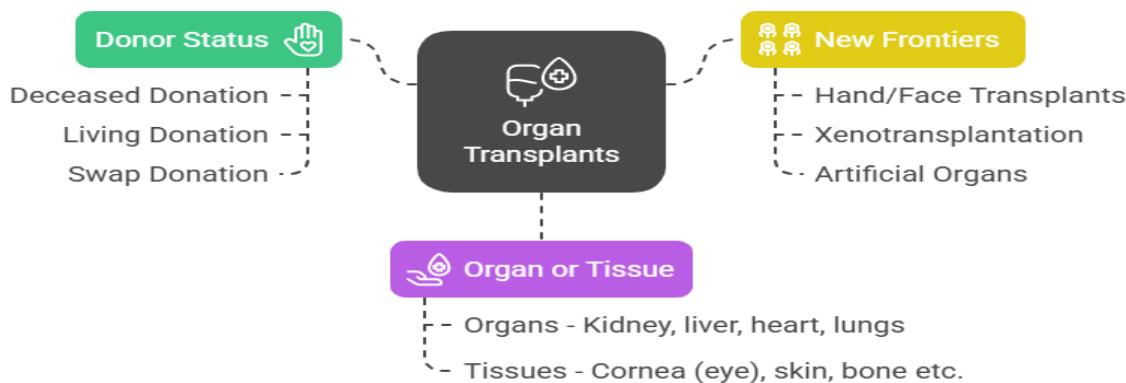
भारत का अंग प्रत्यारोपण संकट

संदर्भ

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के हालिया आंकड़ों से पता चलता है कि अंगों की कमी के कारण लगभग 3,000 लोगों की जान चली गई। राष्ट्रीय प्रतीक्षा सूची में वर्तमान में 82,000 से अधिक मरीज हैं, और अंगों की आपूर्ति और मांग के बीच गंभीर असंतुलन एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बना हुआ है।

अंग प्रत्यारोपण -

Types of Organ Transplants



- भारत ने 2023 में 18,378 अंग प्रत्यारोपण किए, जिससे वह विश्व स्तर पर तीसरे स्थान पर रहा।
- राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (NOTTO) के माध्यम से भारत के अंगदान पंजीकरण में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। 2023 में आधार-आधारित बेबसाइट के लॉन्च के बाद से 33 लाख से अधिक नागरिकों ने अंगदान करने का संकल्प लिया है, जिससे हालिया आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार कुल दाताओं की संख्या 48 लाख से अधिक हो गई है।

भारत में नियम और विनियम -

- **राष्ट्रीय अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम (NOTP):** स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन एक केंद्रीय क्षेत्र कार्यक्रम, जिसका उद्देश्य सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में अंगदान और प्रत्यारोपण को बढ़ावा देना है।
 - इसका लक्ष्य जागरूकता बढ़ाना, अंग विफलता वाले रोगियों के लिए प्रत्यारोपण तक पहुंच में सुधार करना और समग्र अंग प्रत्यारोपण पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना है।
- **राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (NOTTO):** यह भारत में अंग दान और प्रत्यारोपण गतिविधियों के समन्वय के लिए स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत स्थापित शीर्ष राष्ट्रीय निकाय है।
 - क्षेत्रीय और राज्य स्तर पर नेटवर्क को मजबूत करने के लिए 5 क्षेत्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (ROTTOs) और 14 राज्य अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (SOTTOs) स्थापित किए गए।
- **मानव अंगों और ऊतकों का प्रत्यारोपण अधिनियम (THOTA), 1994:** चिकित्सीय उद्देश्यों के लिए मानव अंगों और ऊतकों को हटाने, भंडारण और प्रत्यारोपण को विनियमित करना।
 - **2025 का संशोधन:** कॉर्नियल प्रत्यारोपण केंद्रों में नैदानिक स्पेक्युलर माइक्रोस्कोप की अनिवार्य आवश्यकता को हटा दिया गया है।

भारत में अंग प्रत्यारोपण में प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

- **जीवित दाता पर निर्भरता:** दिल्ली में सबसे अधिक अंग प्रत्यारोपण होते हैं, लेकिन ये ज्यादातर जीवित रिश्तेदारों से ही होते हैं, जो मृत दाताओं के अंगों की गंभीर कमी को दर्शाता है।

- **प्रतीक्षा के दौरान मौतें:** 2020 और 2024 के बीच, अंग प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा करते समय 2,805 रोगियों की मृत्यु हो गई, जिसमें अकेले दिल्ली में 1,425 मौतें हुईं, इसके बाद महाराष्ट्र (297) और तमिलनाडु (233) का स्थान रहा।
- **बुनियादी ढांचे में कमी:** कई सरकारी अस्पतालों में समर्पित प्रत्यारोपण बुनियादी ढांचे, पर्याप्त आईसीयू, इन-हाउस एचएलए क्रॉस-मैचिंग लैब और रिंग-फेस्ट ओटी की कमी है, जिससे अंग पुनर्सांस्थिति और प्रत्यारोपण में देरी होती है।
- **मानव संसाधन की कमी:** सरकारी अस्पतालों में प्रशिक्षित प्रत्यारोपण विशेषज्ञों और गहन चिकित्सा विशेषज्ञों की तीव्र कमी, जो कर्मचारियों के बार-बार तबादलों, समर्पित टीमों के अभाव और कमजोर प्रोत्साहन संरचनाओं के कारण और भी बढ़ जाती है।
- **प्रक्रियात्मक अड़चनें:** ब्रेन-स्टेम डेथ (बीएसडी) समितियों के गठन में देरी, आघात के मामलों में जटिल चिकित्सा-कानूनी प्रक्रियाएं और मृत व्यक्ति के अंगदान के लिए मानकीकृत, समयबद्ध प्रोटोकॉल का अभाव।
- **अवैध व्यापार:** अंगों के अवैध व्यापार की रिपोर्टें लगातार आ रही हैं, जिनमें अक्सर आर्थिक असमानताओं से ग्रस्त कमजोर आबादी और सीमा पार मध्यस्थ शामिल होते हैं।
- **नैतिक दुविधाएं:** असंबंधित दान में वास्तविक परोपकारिता बनाम जबरदस्ती का निर्धारण जटिल बना हुआ है। दान के औचित्य के रूप में "प्रेम और स्नेह" शब्द विशेष रूप से विवादास्पद है।

आगे की राह -

- **मृत व्यक्ति के अंगदान को सशक्त बनाना:** सभी बड़े अस्पतालों में अनिवार्य रूप से ब्रेन-डेथ की पहचान और सूचना को संस्थागत रूप देना, प्रत्यारोपण समन्वयकों का विस्तार करना और जीवित दाताओं पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए निरंतर जन जागरूकता अभियान चलाना।
- **सार्वजनिक प्रत्यारोपण बुनियादी ढांचे का उन्नयन:** देरी और अंग की बर्बादी को कम करने के लिए समर्पित प्रत्यारोपण आईसीयू, रिंग-फेस्ट ऑपरेशन थिएटर, इन-हाउस एचएलए लैब और मजबूत ग्रीन-कॉरिडोर लॉजिस्टिक्स में निवेश करना।
- **कुशल जनशक्ति का निर्माण और बनाए रखना:** सरकारी अस्पतालों में समर्पित प्रत्यारोपण कैडर बनाना, विशेष प्रशिक्षण, स्थिर पोस्टिंग और प्रत्यारोपण टीमों के लिए प्रदर्शन-लिंक्ड प्रोत्साहन सुनिश्चित करना।
- **प्रक्रियाओं और शासन को सुव्यवस्थित करना:** NOTTO के तहत एक समान राष्ट्रीय प्रोटोकॉल के माध्यम से BSD प्रमाणन, चिकित्सा-कानूनी मंजूरी और अंग आवंटन को मानकीकृत और समयबद्ध करना।
- **नैतिक निरीक्षण और पहुंच को मजबूत करना:** अंग तस्करी को रोकने के लिए निगरानी को कड़ा करना, असंबंधित दान के लिए सहमति मानदंडों को स्पष्ट करना, और सार्वजनिक स्वास्थ्य योजनाओं के तहत प्रत्यारोपण और आजीवन देखभाल के लिए वित्तीय कवरेज का विस्तार करना।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

प्रारंभिक परीक्षा

पेट्रा और एलोरा गुफाएं

संदर्भ

भारत और जॉर्डन ने अपनी 'रॉक-कट' (चट्टानों को काटकर बनाई गई) वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध दो प्रतिष्ठित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों— पेट्रा और एलोरा की गुफाओं— के बीच एक ट्रिविनिंग समझौता (जुड़वाँ समझौता) किया है।

पेट्रा गुफाओं के बारे में -

- **अवस्थिति:** दक्षिण जॉर्डन, मृत सागर और अकाबा की खाड़ी के बीच।
- **काल:** स्थापना लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व।
- **निर्माता:** नबातियन, एक अरब व्यापारिक सभ्यता।
- **वास्तुकला:** गुलाबी लाल बलुआ पत्थर की चट्टानों को काटकर बनाई गई वास्तुकला।
- **प्रमुख संरचनाएं:** अल-खजनेह (खजाना), अद-दीर (मठ), रॉयल मकबरा, सिक (संकीर्ण कण्ठ)।



एलोरा गुफाओं के बारे में -

- **अवस्थिति:** औरंगाबाद जिला, महाराष्ट्र।
- **काल:** छठी और दसवीं शताब्दी ईस्वी के बीच उत्खनन किया गया।
- **संरक्षण:** राष्ट्रकूट, चालुक्य और कलचुरी राजवंश।
- **वास्तुकला:** बेसाल्ट चट्टान से खोदे गए चट्टान-काटकर बनाए गए गुफा परिसर।
- **धार्मिक विविधता:** बौद्ध गुफाएं (गुफाएं 1-12), हिंदू गुफाएं (गुफाएं 13-29), जैन गुफाएं (गुफाएं 30-34)।



स्रोत: [यूएनआई इंडिया](#)

नाइट्रोफुरन्स(Nitrofurans)

संदर्भ

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने अपने क्षेत्रीय कार्यालयों को नाइट्रोफुरन्स अवशेषों की उपस्थिति की जांच के लिए अंडों के नमूने एकत्र करने का निर्देश दिया है।

नाइट्रोफुरन्स के बारे में -

- **नाइट्रोफुरन्स सिंथेटिक ब्रॉड-स्पेक्ट्रम रोगाणुरोधी यौगिकों** का एक समूह है जो नाइट्रोफ्यूरान से प्राप्त होते हैं, जिनमें फ्यूरान रिंग से जुड़ा एक नाइट्रो समूह होता है।
- **सामान्य उदाहरण:** नाइट्रोफ्यूरेटोइन, फुराजोलिडोन, फुरल्टाडोन, नाइट्रोफ्यूराजोन।
- **उपयोग:** नाइट्रोफ्यूरेटोइन का व्यापक रूप से मनुष्यों में मूत्र पथ संक्रमण (UTIs) के इलाज में उपयोग किया जाता है।
 - पहले पशु चिकित्सा और मत्स्य पालन में जीवाणु संक्रमण के इलाज के लिए इसका उपयोग किया जाता था।
- **भारत, यूरोपीय संघ और अमेरिका सहित कई देशों में** खाद्य उत्पादन करने वाले पशुओं में इसका उपयोग प्रतिबंधित है।

स्रोत: [न्यू इंडियन एक्सप्रेस](#)

संयुक्त राष्ट्र सभ्यताओं का गठबंधन (UNAOC)

संदर्भ

संयुक्त राष्ट्र सभ्यताओं के गठबंधन ने वैश्विक विभाजन को पाटने के दो दशक पूरे कर लिए हैं।

UNAOC के बारे में -

- **स्थापना:** 2005 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्पेन और तुर्किये की पहल पर लॉन्च किया गया।
- **उद्देश्य:** संस्कृतियों, धर्मों और सभ्यताओं के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना और उग्रवाद, ध्रुवीकरण और असहिष्णुता का मुकाबला करना।
- **तर्क:** 9/11 के बाद के संदर्भ में बढ़ते सांस्कृतिक अविश्वास, पहचान-आधारित संघर्षों और कट्टरपंथ को संबोधित करने के लिए बनाया गया।

● प्रमुख पहल:

- युवा एकजुटता कोष (YSF): शांति निर्माण और सामाजिक समावेशन पर युवाओं के नेतृत्व वाली परियोजनाओं का समर्थन करता है।
- PLURAL+ पहल: प्रवासन, विविधता और सामाजिक समावेशन पर युवा वीडियो महोत्सव।

स्रोत: [संयुक्त राष्ट्र समाचार](#)

एकम एआई और प्रोजेक्ट संभव

संदर्भ

भारतीय सेना ने विजय दिवस के हिस्से के रूप में एकम एआई और प्रोजेक्ट संभव का प्रदर्शन किया।

एकम एआई के बारे में -

- पूर्णत: स्वदेशी और सुरक्षित: यह संवेदनशील रक्षा और परिचालन वातावरण में उपयोग के लिए विकसित एक पूर्णत: स्वदेशी और सुरक्षित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म है।
- आत्मनिर्भरता और सुरक्षा: इसे विदेशी सॉफ्टवेयर या बाहरी क्लाउड सिस्टम से स्वतंत्र, विश्वसनीय और सुरक्षित रहने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- उद्देश्य: यह प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं (रक्षा कर्मियों सहित) को उच्च-सुरक्षा संदर्भों में भी सूचनाओं का विश्लेषण करने, दस्तावेजों का प्रबंधन करने और निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से सहायता करने में सक्षम बनाता है।

प्रोजेक्ट संभव -

- यह एक पोर्टेबल उपग्रह-आधारित संचार प्रणाली है जिसे सीमित या नेटवर्क कवरेज रहित क्षेत्रों में विश्वसनीय मोबाइल कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- उद्देश्य: दूरस्थ सीमावर्ती क्षेत्रों, आपदाग्रस्त क्षेत्रों और अन्य कनेक्टिविटी-बाधित स्थानों में तेजी से संचार स्थापित करना।

स्रोत: [पीआईबी](#)

चो ला और डोक ला दर्दे

संदर्भ

भारत रणभूमि दर्शन पहल के तहत चो ला और डोक ला दर्दे को युद्धक्षेत्र पर्यटन के लिए खोल दिया गया है।

चो ला दर्दे के बारे में

- अवस्थिति: पूर्वी हिमालय, सिक्किम में भारत-चीन (तिब्बत) सीमा पर।
- कनेक्टिविटी: सिक्किम (भारत) को चुम्बी घाटी (चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र) से जोड़ता है।
- यह वही स्थान है जहां 1967 में भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच चो ला में झड़पे हुई थीं, जहां भारत ने चीनी आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल कर दिया था।



डोक ला दर्दे के बारे में

- स्थान: भारत, भूटान और चीन के त्रिकोण पर, डोकलाम पठार के पास।
- कनेक्टिविटी: भूटान और चुम्बी घाटी के बीच एक मार्ग के रूप में कार्य करता है।
- यह 2017 में भूटानी क्षेत्र में चीनी सड़क निर्माण के बाद भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हुए डोकलाम गतिरोध के कारण चर्चा में आया।

भारत रणभूमि दर्शन क्या है?

- राष्ट्रीय पहल: यह भारत भर में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण युद्धक्षेत्रों और सीमावर्ती स्थलों को नागरिकों और आगंतुकों के लिए खोलकर 'बैटलफिल्ड टूरिज्म' (रणभूमि पर्यटन) को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई एक राष्ट्रीय पहल है।
- संयुक्त विकास: इसे रक्षा मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय और भारतीय सेना द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है।
- उद्घाटन: इसका उद्घाटन 15 जनवरी 2025 को 77वें सेना दिवस के अवसर पर किया गया।

स्रोत: [न्यू इंडियन एक्सप्रेस](#)

वैश्विक मूल्य श्रृंखला (GVC) विकास रिपोर्ट

2025

संदर्भ

एशियाई विकास बैंक (ADB), विश्व व्यापार संगठन (WTO), विश्व आर्थिक मंच (WEF) और भागीदारों द्वारा विकसित "बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में GVCs की पुनर्रचना" शीर्षक वाली वैश्विक मूल्य श्रृंखला (GVC) विकास रिपोर्ट 2025 जारी की गई।

मुख्य निष्कर्ष -

- वैश्वीकरण को नया आकार दिया जा रहा है, उलटा नहीं: जीवीसी तकनीकी बदलाव, हरित संक्रमण और भू-राजनीतिक पुनर्सैरखण के अनुकूल हो रही हैं, जो मजबूत लचीलेपन का प्रदर्शन कर रहे हैं।
- वैश्विक व्यापार में GVC की हिस्सेदारी: वैश्विक व्यापार में GVC-लिंक्ड व्यापार की हिस्सेदारी 46.3% है, जो 2022 के 48% के उच्चतम स्तर से मामूली रूप से कम है।
- सेवाओं और डिजिटल व्यापार में वृद्धि: सेवाओं ने जीवीसी भागीदारी में वस्तुओं को पीछे छोड़ दिया है, जो विनिर्माण निर्यात में मूल्य वर्धित में एक तिहाई से अधिक का योगदान देता है।
- भारत का बेहतर जीवीसी एकीकरण: डिजिटल सेवाओं के निर्यात में मजबूत वृद्धि से बड़े पैमाने पर प्रेरित है।
- क्षेत्रीय संकेन्द्रण: एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका जीवीसी व्यापार पर हावी हैं, जबकि लैटिन अमेरिका और अफ्रीका कमजोर रूप से एकीकृत हैं।

उभरते रुझान

- पुनर्गठन: चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं विदेशी मूल्यवर्धन पर निर्भरता कम करने के लिए घरेलू उत्पादन बढ़ा रही हैं।
- विनिर्माण विविधीकरण: चीन के प्रभुत्व के बावजूद आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के प्रयास जारी हैं, जिसमें वैश्विक इलेक्ट्रिक वाहन उत्पादन में इसकी 76.9% हिस्सेदारी भी शामिल है।
- भारत की वैश्विक स्थिति: भारत शीर्ष 10 मूल्य वर्धित अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है, जो निर्यात (2024) में वैश्विक घरेलू मूल्य वर्धित में 2.8% का योगदान देता है।

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स